प्रभुदयाल श्रीवास्तव

नदी कंधे पर

अगर हमारे वश में होता,
नदी उठाकर घर ले आते।
अपने घर के ठीक सामने,
उसको हम हर रोज बहाते।।

कूद कूद कर उछल उछलकर,
हम मित्रों के साथ नहाते|
कभी तैरते कभी डूबते,
इतराते गाते मस्ताते।।

'नदी आ गई' चलो नहाने,
आमंत्रित सबको करवाते।
सभी उपस्थित भद्र जनों का,
नदिया से परिचय करवाते।।

अगर हमारे मन में आता,
झटपट नदी पार कर जाते।
खड़े-खड़े उस पार नदी के,
मम्मी मम्मी हम चिल्लाते।

शाम ढले फिर नदी उठाकर,
अपने कंधे पर रखवाते।
हम लाए थे उसे जहाँ से
जाकर उसे वहीं रख आते।।

मौसी आई

बिना सूचना बिना बताए,
मौसी आई रेल से।

हमसे बोली बच्चो तुमको,
आज चकित कर देना था।
और सभी हँसते चेहरों से,
खुशियों का रस लेना था।
और मजे लेने थे मुझको,
घर की रेलम पेल से।

मस्त रहो, मुस्काओ गाओ,
बच्चो तुम्हें बताना था।
यह जीवन खुशियों का घर है,
यही तुम्हें समझाना था।
नई ऊर्जा मिलती मन को,
मस्ती वाले खेल से।

संघर्षों से कभी न डरना,
दुख- सुख आते जाते हैं।
जो होते हैं समझदार वे,
दुख में भी मुस्काते हैं।
यह जीवन ही बना हुआ है,
दुखों सुखों के मेल से।

 ISSN:2583-8849